ये ऑाधियॉ क्यों आती हैं!

धनबाद मे हमारे सरकारी घर के अहाते मे एक ताड़ का काफी ऊँचा पेंड़ था. जिसके पत्तों से कई घोंसले लटकते झूलते रहते थे। आषाढ के अन्तिम दिनो मे गौरइया से मिलती जुलती चिड़ियाएँ सुबह से शाम तक लम्बी लम्बी सूखी दूबें इकट्ठा करके एक कनटोपी के आकार के घोंसले बनाती थीं. जिनमें दो तल्ले होते थे। बचपन के दिनों मे स्कूल के बाद अपने बाहर वाले पाखाने की सीढियों पर घंटो बैठा मै उन्हे अपलक निहारा करता था। अपनी चोंचो से वो इतना आरामदेह घोंसला बनाती थीं. जो एक अच्छा दस्तकार या कलाकार शायद ही बना पाता। देखते ही देखते ताड़ के पत्तों के छोरों से सैकड़ों घोसले लटकने लग पड़ते थे। फिर आता था सावन भादो और आए दिन आती थीं ऑाधियॉ। इन ऑाधियों के बाद अक्सर मुझे बगान मे दो चार गिरे घोसले मिलते थे. जिनमे या तो फूटे अंडे या फिर मरी नवजात चिड़ियाएँ मिलती थीं। अंडो को तो मै कम्पोस्ट के गढों मे फेंक आता था और नवजात चिड़ियाओं को खुरपी से छोटे छोटे गढे खोदकर बगान मे गाड़ देता था। घोंसलो को अपने कमरे मे लाकर ताखे पर सजा कर रख देता था। ये मेरे कई वर्षो की कहानी है। हर आषाढ मे फिर से कई नए घोसले बनते थे। हर सावन भादो मे फिर से कई बार ऑाधियॉ भी आती थीं. जिनके बाद कई घोसले मुझे ज़मीन पर गिरे मिलते थे। उन्हे पाने पर उन दिनों भी मै बेहद खुश नही होता था। फिर भी मै उन्हे इकट्ठा करता रहता था। घंटो महीनो वर्षो की अविराम मेहनत अपनी हठ. अपने स्वभाव की वजह से एक ऑाधी पलों मे सब कुछ उजाड़ कर चली जाती है।

ऑाधियॉ उन दिनो भी आती थींआज भी आती हैं. आती ही रहेंगी ये ऑाधियॉ। मुझमे इन अनाम चिड़ियाओ जैसी हिम्मत नही है। थोड़ी सी भी तेज हवा में मै अपनी सारी खिड़कियॉ और दरवाजे बन्द कर देता हूॅ और यही सोचने बैठ जाता हूॅ कि ये हठी ऑाधियॉ क्यों आती हैं !

प्रमोद कुमार सिंह